International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 10-14

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 10-14
www.allresearchjournal.com
Received: 09-08-2020
Accepted: 16-09-2020

प्रो. (डॉ.) राम सेवक सिंह
प्रोफेसर, मैथिली विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, भागलपुर,
बिहार, भारत

श्रीमती खुशबू कुमारी सिंह
शोधार्थी (मैथिली), बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रो. (डॉ.) राम सेवक सिंह
प्रोफेसर, मैथिली विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, भागलपुर,
बिहार, भारत

एकैसम शताब्दीक मैथिली पत्र–पत्रिकामे कवयित्रीक बाल काव्य

प्रो. (डॉ.) राम सेवक सिंह एवं श्रीमती खुशबू कुमारी सिंह

प्रस्तावना

प्रकृतिक प्रांगण जहिना भिन्न–भिन्न तरहक पुष्प सँ प्रस्फुटित होइत अछि ओकर मनमोहक सुगंधक गन्धवाह सँ भूभागक विस्तृत कोणा सुगंधित होइत अछि, तहिना कोना साहित्यक पत्र–पत्रिकाक कोना भाषामे कतय की भए रहल अछि ताहि सँ सभ जन कँ परिचय करबैत अछि। ओहि भावाक प्रति लोकक अनुराग वा चेतना सुप्त अछि तँ ओकरा जगेबाक काम करैत अछि, आ अपन भाषाक प्रति प्रेम कँ बढ़बैत अछि।

पत्र–पत्रिकाक प्रथम कर्त्तव्य थिकैक लोक चेतना कँ जगायब एवं अपन भाषाक प्रति प्रेम कँ आकर्षित करब। भाषाक प्रेम जगला सँ शान्त साहित्यक चेतना जाग्रत होइत अछि आ साहित्यक चेतनाक जागरण सँ रचना प्रसुन रंग–विरंगक भाषाक उपवन मे प्रस्फूटित होइत अछि, तथा जन–जन के सुरभित एवं विमोहित करैत अछि। जखन कोनो भाषा अपन रचना सौन्दर्य व आहलादकता सँ जन–जन कँ आकर्षित करैत अछि तखन ओकर मान्यता स्वतः भए जाइत अछि। एहि संबंध मे कवि कोकिल विद्यापति कहैत छथि – महुअर बुज्झउ कुसुमरस कव्व कलाउ छइल्ल।" [1]

मैथिली साहित्यक स्वर्णिम इतिहासक साक्षीक रूपमे पत्र–पत्रिकाक विकास कँ मानल जा सकैत अछि। आठम शताब्दीक लग–पाससँ उपलब्ध साहित्यिक विरासत कँ हमरा लोकनि अद्यतन सम्हारने छी। एक दिस डाक, घाघ, वर्णरत्नाकर सँ ल' क विद्यापतिक रचना–संसार धरि हमर ऐतिहासिक धरोहरिक रूपमे सुरक्षित अछि तँ दोसर दिस चन्दा झाक समकालीन साहित्यकारक कृति आधुनिक मैथिली साहित्यक मुख्य आधार स्तम्भ रूपमे हमरा सभकँ गौरवान्वित क' रहल अछि। मानल जाइत अछि जे आरम्भिक काल सँ आधुनिक कालक किछु समय (1900 ई. धरि लगभग) धरि साहित्य सर्वजन सुलभ नहि छल। एकटा विशेष वर्ग धरि एकर सीमा रहय। कारण जे किछु रहल हो, अशिक्षा वा प्रचार–प्रसारक कमी, मुदा साहित्यक मर्म आ ओकर रस जनसामान्य धरि नहि पहुँचि पाबि रहल छल। ई समस्या विकराल भेल जा रहल छल। तैं विचार करब आवश्यक भए गेल आ एहने समयमे प्रवासी मैथिली लोकनि द्वारा 1905 ई सँ मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मिथिला सँ सुदूर जयपुर (राजस्थान) सँ "मैथिल हित साधन" क रूपमे द्वितीय मैथिली पत्रिकाक श्री गणेश कएल गेल। एकर प्रथम संपादक भेलाह पंडित मधुसूदन झा। प्रथम मैथिली पत्रिकाक रूपमे काशीक विद्वतज्जन समिति दिस सँ महामहोपाध्याय पं. मुरलीधर झाक संपादकत्वमे 1905 मे "मिथिला मोदक" उदय काशी सँ भेल तथा 1929 ई. हिनकर मृत्युक उपरान्त एकर प्रकाशन बन्द भए गेल। पुनः 1936 सँ श्री उपेन्द्र नाथ झाक संपादकत्व मे 1941 धरि पत्रिकाका पुनर्प्रकाशन भेल।

मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा सँ बाबू भोला लाल दासक सम्पादनमे 1937 ई. मे 'भारती' मासिकर प्रकाशन आरम्भ भेल। 'भारती' पत्रिकाक संबंधमे डॉ. जयकान्त मिश्र लिखने छथि जे – "एहि पत्रिकामे आलोचनात्मक गंभीर निबन्ध–यात्रा, कथा आदि रहैत छल। ई प्राचीन मैथिली साहित्य सेहो प्रकाशित करए लागल छल, जेना ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर'। एकर सम्पादकीय टिप्पणीमे सहज प्रज्ञा, गम्भीरता आओर उदार दृष्टि झलकैत छल।" [2]

डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' "भारती" पत्रिकाक सम्बन्धमे लिखने छथि– "मैथिली साहित्यमे 'भारती' क महत्त्व अछि गम्भीर साहित्यक प्रकाशन ओ प्रचारक दृष्टिएँ। साहित्यक समालोचना, यात्रा तथा प्राचीन स्थायी मूल्यक वस्तुक प्रकाशनक दृष्टिएँ सेहो एकर बड़ महत्त्व अछि। ई पत्रिका व्यक्तिगत विवाद सँ बाँचि कँ चलए चाहैत छल मुदा से भेलैक नहि। पाछाँ ई राज दरभंगाक प्रभावमे आबि भुवनजीपर व्यक्तिगत आक्षेप करैत व्यंग्य चित्र प्रकाशित कए विवादक विषय भए गेल ओ शीघ्र एकर अन्त भए गेल।" [3]

प्रो. रमानाथ झाक सम्पादकत्वमे – "मैथिली साहित्य पत्र" त्रैमासिक रूपँ 1937 ई. मे दरभंगा सँ प्रकाशित भेल। जाहिमे साहित्यक अमूल निधि सभ प्रकाशित होइत छल– एहि संबंध मे– पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ग्रंथ माला कहलनि तँ प्रमुख आलोचना साहित्यक इतिहासकार मैथिली

साहित्यक आलोचनात्मक इतिहासक लेखक डॉ. दिनेश कुमार झा अपन विचार व्यक्त करैत कहलनि जे "मैथिली पत्रकारिताक इतिहास मे "मैथिली साहित्य पत्र' कैं मैथिलीक प्राचीन साहित्य सम्पादक एवं नवीन साहित्य सर्जनक दृष्टि सँ अपन विशिष्ट स्थान सुरक्षित कएने अछि।" [4] तत्पश्चात कतेको मैथिली पत्र–पत्रिकाक प्रकाशन निरंतर होइत रहल, जाहिमे मिथिला मिहिर, मिथिला भारती, मैथिली प्रभा, पल्लव, आखर, वैदेही, विभूति, सोना–माटि, बटुक आदि शताधिक पत्र–पत्रिकाक इतिहास कैं देखल जा सकैत अछि। यद्यपि एहि सभमे मिथिला मिहिर सर्वाधिक दीर्घकालिक पत्रिका बनल रहल तथापि मैथिली साहित्यक विकासमे अन्याय पत्र–पत्रिकाक योगदान सेहो महत्वपूर्ण रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे पत्र–पत्रिकाक योगदानक संबंध मे प्रो (डॉ.) सत्यनारायण मेहताक मंतव्य अछि जे, "पत्र–पत्रिका तत्कालीन समयक साहित्यिक गतिविधि एवं जनचेतनाक संवाहक होइत अछि। पत्र–पत्रिका सँ तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक स्थितिक सूचना भेटि जाइत छैक। वर्त्तमान समयमे ज्ञान–विज्ञानक प्रचार–प्रसार, राजनैतिक चेतना एवं जन–सामान्यक मनोरंजनमे पत्र–पत्रिकाक महत्त्वपूर्ण योगदान स्वतःसिद्ध अछि।" [5]

पत्र–पत्रिकाक संबंध एहने विचार व्यक्त करैत डॉ. किरण कुमारी कहैत छथि जे– "पत्र–पत्रिका कैं युगक दर्पण कहल गेल छैक। एहि मध्य ओहि कालक आशा–आकांक्षा, शक्ति–सामर्थ्य, उपलब्धि, अभाव ओ आकुलता तथा नैराश्यक स्वर प्रतिबिम्बित रहैत अछि। दोसर दिस पत्रकारिता वर्त्तमान ओ भविष्यक मार्गदर्शक, विचार एवं आदर्शक प्रचारक आओर जातीय एवं सामाजिक अभ्युत्थान लेल शौर्यक उद्दीपक आ शंखक उद्घोषक होइत अछि। ई जनमानसक प्रतिबिम्ब ओ चेतनाक उत्प्रेरक होइत अछि। इएह हेतु थिक जे पत्र–पत्रिकाक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्वक होइत अछि।" [6]

एहि सम्बन्धमे डॉ. अर्जुन तिवारीक मन्तव्य अछि जे, "पत्रकारिता जनभावनाक अभिव्यक्ति, सद्भावक उद्भूत आओर नैतिकताक पीठिका अछि। संस्कृति आओर स्वतंत्रताक वाणी होएबाक संगहि ई जीवनमे अभूतपूर्व क्रान्तिक अग्रदूतिका अछि।" [7]

एहि तरहे हम ऐहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जैं पत्रकारिता एकटा कला थीक, पत्रकारिता विज्ञानो थिक, पत्रकारिता वाणिज्य सेहो थीक। अपन मातृभाषाक उत्थानक लेल अपन समाजिक संरचनाक उत्थानक लेल ओ अपन सभ्यता सांस्कृति संवर्धनक लेल लोक जखन एकरा ग्रहण करैत अछि, तखन पत्रकारिता धर्म बनि जाइत अछि।

मैथिलीमे 21सम शदी मे धनेरो पत्र–पत्रिका प्रकाशित भए रहल अछि जे एहि प्रकारे देखल जा सकैछ –

पत्र–पत्रिकाक मैथिलीक अध्ययन एवं अध्यापन मे योगदानक संबंध मे ऐह कहब जे ई पत्र–पत्रिका लोक भावक सम्बाहक होइछ, आ ठाम–ठाम मार्गदर्शकक काम करैत अछि। पत्र–पत्रिकाक मुख्य उद्देश्य होइत अछि सूतल लोक कैं उचित अधिकारक लेल प्रेरित करब, समसमायिक घटना सँ लोक कैं अवगत करायव वा साहित्य सृजन मे योगदान करब। एहि उद्देश्यमे मैथिलीक भिन्न–भिन्न पत्र–पत्रिका काम कऽ रहल अछि। 'स्वदेश' कैं मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्रिका हो एबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। ओना तैं बाद मे एकर प्रकाशन दरभंगा सँ मासिक पत्रिकाक रूपमे 1948 ई. मे भेल। सम्पादक छलाह सुमनजी। एकरा दैनिक रूपमे 1955 ई. सँ शुरू कएल गेल। कुल 65 गोट अंक दैनिक रूपैं प्रकाशित भेल।

"वैदेही"क प्रकाशन पाक्षिक रूपमे सीतामढ़ी सँ 26 जनवरी, 1950 ई. सँ भेल। ताहि समयमे एकर सम्पादक छलाह– प्रो. श्री कृष्णकान्त मिश्र। पाक्षिक रूपमे छओ गोट अंक प्रकाशित भेल। तत्पश्चात् एहि पत्रिकाक प्रकाशन दरभंगा सँ होमए लागल। मासिक रूपमे एकर प्रकाशन 1953 ई. मे भेल। ओहि समयमे एकर सम्पादक मण्डलमे छलाह– प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' सुधांशु 'शेखर' चौधरी ओ प्रो. कृष्णकान्त मिश्र। पश्चात् किछु दिन एकर सम्पादन श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ओ किछु दिन सोमदेवजी सेहो कएलनि।

मैथिली अकादमी, पटना सँ अक्टूबर 1980 ई. सँ "मैथिली अकादमी पत्रिका" नाम सँ द्वैमासिक पत्रिका बहराएब प्रारम्भ भेल। एकर सम्पादकमण्डलमे छलाह– पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन', पं. गोविन्द झा, श्री दीनानाथ झा, श्री गोपीरमण चौधरी तत्पश्चात् सम्पादक भेलाह – डॉ. मदनेश्वर मिश्र आ श्री योगानन्द झा।

मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे द्वैमासिक पत्रिका "कोसी कुसुम"क प्रकाशन सँ पहिल महिला सम्पादिकाक उदय भेल। उक्त महिला छलीह– श्रीमती अम्बिका मिश्र। ओएह एकर सम्पादिका छलीह। जनवरी 1984 सँ एकर प्रकाशन सहरसासँ आरम्भ भेल। सम्पादकमण्डलमे अन्य नाम छल– श्रीमती रीना झा आओर श्रीमती अंजू प्रसाद।

"भाखा" मासिकक प्रकाशन फरवरी 1987 ई. सँ पटना सँ विभूति आनन्दक सम्पादकत्त्वमे आरम्भ भेल। "अपन भाषामे, अपन लोक द्वारा गप कहबाक लेल देहरिपर आबि ठाढ़ भेल एकटा नव पत्रिका 'भाखा'। "भाखा" शब्द भाषाक ठैंठ मैथिली रूप थिक जकरा हमरा सभ गप–सपक क्रममे सहजे बाजि लेल करै छी। जीवन्त भाषा ई लक्षण होइछ जे ओ जनसामान्यमे प्रचलित शब्द, वाक्य–समूह आदिकैं जँ स्वीकृति प्रदान कएल जाए तँ कोनो अनुचित नहि, अपितु आवश्यक वाध्यता सेहो।" [8]

एकैसम शताब्दीक दुई दशक लगभग बीति रहल अछि। एहिमे 19 वर्षक अवधि मे मैथिली पत्रकारिताक उत्तरोतर वृद्धि भेल अछि। जे निम्नवत रूपैं देखल जा सकैत अछि यथा : दरभंगा सँ "मिथिला सुरभि", "लोक भूमि", "हाल चाल", "जखन–तखन", "विद्यापति टाइम्स मैथिली", "मिथिला आवाज", सहरसा सँ "देशज", मधुबनी सँ "सिया धिया", "बाल बन्धु", समस्तीपुर सँ "मिथिला अरिपन", भागलपुर सँ "भूमिजा", "मिथिमालिनी", "शोधार्थी", पटना सँ "देसिल बयना", "नवारम्भ", "सांध्य गोष्ठी", "समय–साल", "घर–बाहर", "मैथिली अकादेमी", खगड़िया सँ "हिलकोर", अररिया सँ "अछिंजल", बेगुसराय सँ "दक्षिण मिथिला", दिल्ली सँ "मिथिला एक्सप्रेस", "अंकुर", "मिथिला लोक", "अंतिका", "तीरभुक्त", "कोशी संदेश", कलकत्ता सँ "भोरूकवा", "हम मैथिल", "कर्णामृत", "मिथिला दर्शन", प्रयाग सँ "प्रवासी", गुहाटी सँ "पूर्वोत्तर मैथिली समाज", हैदराबाद सँ "देसिल बयना", बम्बई सँ "मिथिला दर्शन", नासिक सँ "मैथिली पूणर्जागरण", झारखण्ड सँ "मिथि जनवाणी", जमशेदपुर सँ "सनेश", राँची सँ "पक्षधर" एवं नेपाल सँ "नेमीकानन", "गाम–घर", "सलहेश वाणी" आदि धनेरो पत्र–पत्रिका प्रकाशित भए रहल अछि जाहि मे हम किछु मुख्य पत्रिकामे प्रकाशित बाल साहित्य/बाल काव्यक चर्चा करब। "घर–बाहर", "समय–साल", "मिथिला दर्शन", "प्रवासी", "मिथिला सृजन", "मिथिला दर्पण", "पूर्वोत्तर मैथिल", "शोधार्थी", "तिरहुत", "मिथिला सुरभि", "लोक भूमि", "हाल–चाल", "जखन–तखन", "मिथिला भारती" आदि शोध पत्र–पत्रिकाक प्रकाशन वर्त्तमानमे भए रहल अछि। अपना–अपना स्तर पर सभ पत्रिका कमोबेस पत्रकारिताक गुण–धर्मक पालन करैत अपन दायित्वक निर्वहन कए रहल अछि।

कोनो भाषा साहित्यक विकास मे पत्र–पत्रिकाक महत्वपूर्ण स्थान होइत छैक। कारण साहित्य आ साहित्यकार जन मानसक बीचक सम्पर्क सुत्र पत्र–पत्रिके सँ होइत अछि। अत्याधुनिक मैथिली साहित्यक प्रचार–प्रसार आ संबर्द्धन मे ई तथ्य किछु विशेष रूप सँ प्रमाणित भेल अछि। 21सम शताब्दीक आरम्भहि सँ देशक भिन्न–भिन्न प्रान्त सँ अनेकानेक पत्र–पत्रिका प्रकाशनमे आयल अछि। जाहिसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक सभ विधा कैं समर्बद्ध ओ श्रीवृद्धि मे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कएल अछि। मैथिली पत्र–पत्रिका नवोन्मेषक विस्तृत चर्चा हम, 21सम शताब्दी मे

आयल मैथिली पत्र–पत्रिका जे सभ अछि तकरे माध्यमे हम बाल कवयित्रीक कवितामे योगदानक चर्चा करब।

21सम शताब्दीक मैथिली पत्र–पत्रिकामे हम किछु प्रमुख कवयित्रीक बाल कविता सँ परिचय कराएब जे निम्नवत अछि, यथा :

'समय–साल' द्वैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन पटना सँ फरवरी 2000 ई. सँ 'आइ–काल्हि' नामेँ प्रारम्भ भेल। नवम्बर 2000 ई. सँ भारत सरकारक आदेशानुसार एहि पत्रिकाकेँ 'समय–साल' नाम सँ पंजीकृत कएल गेल। 'आइ–काल्हि' नाम सँ मात्र चारि अंक प्रकाशित भेल, फरवरी 2000 सँ अगस्त 2000 ई. धरि। एकर सम्पादक भेलाह श्री शरदिन्दु चौधरी। ई पत्रिका नैतिक चेतनाक संवाहक रूपमे अपन कार्य निष्पादन कए रहल अछि। एहिमे सामाजिक, राजनैतिक, सामाजिक, क्रीड़ा, फिल्मादि विषयक रूपमे समीक्षात्मक वा आलोचनात्मक निबन्ध सभ प्रकाशित होइत अछि।

'पूर्वोत्तर मैथिल'क प्रकाशन अक्टूबर 2001 ई. सँ अद्यावधि गुवाहाटी सँ भए रहल अछि। प्रारंभमे एकर प्रधान सम्पादक छलाह– श्री सत्यानन्द पाठक आब एकर संपादक थिकाह दिनकर कुमार आ प्रबंध सम्पादक थिकाह प्रेमकान्त चौधरी। ई त्रैमासिक पत्रिका थिक। एहिमे कथा, निबन्ध, युवामंच, उपन्यास, महिला सँ संबंधित लेख, कविता आदि विविध साहित्यिक सामग्री प्रकाशित होइत अछि। दोसर दिस पत्रिकाक अन्यान्य सामग्री असम ओ मिथिलाक संस्कृतिक मध्य सेतुक काज कए रहल अछि।

'घर–बाहर' त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन चेतना समिति, पटना सँ भए रहल अछि। एहि नाम सँ एकर प्रकाशन आरम्भ भेल अक्टूबर 2002 ई. मे। मुदा ई पत्रिका पूर्वमे 'खोज खबरि' नाम सँ प्रकाशित भेल। 'घर–बाहर' मुख्य रूप सँ साहित्यिक पत्रिका अछि जाहिमे मैथिली गद्यक विभिन्न विधाक रचना सभ प्रकाशित होइत अछि। एकर सम्पादक डॉ. बासुकीनाथ झा आ सम्प्रति सम्पादक मैथिली साहित्य मुख आलोचन डॉ. रमानन्द झा 'रमण' कए रहल वाछथि।

'मैथिल समाज' बनारस काशी स्थित मैथिल समाजक उन्नयन हेतु कतेको सराहनीय प्रयास कए रहल अछि। दरभंगा घाट दरभंगा पैलेस संरक्षणक बात हो वा मंडन मिश्रक मूर्तिकेँ संवर्धनक बात हो वा अन्य कोनो मैथिलीक कार्यक्रम, सभमे हिनका सभक प्रयास अनुकरणीय अछि। मैथिल समाज, बनारस द्वारा प्रति वर्ष विद्यापति महोत्सवक आयोजन कएल जाइत अछि, जाहिमे 'मिथिला दर्पण' नामक स्मारिकाक प्रकाशन सेहो कएल जाइत अछि।

'मिथिला–सुरभि'क आँकुर समिति, बहेड़ीक, दरभंगाक किशोर कुमार झा 'सिक्किन' सम्पादकत्व वा निदेशन मे प्रकाशित भए रहल अछि। जकर प्रयोजन छैक जन–चेतना केँ जाग्रत करब। सर्वांगीण विकासक लेल ठप्प पड़ल उद्योग–धंधा केँ पुनः सुचारू रूप सँ संचालन कराबी। विगत समय मे जे एहि पत्रिकाक अंक प्रकाशित भेल ओकर प्रशंसा मिथिलांचल सँ लए सुदूर नेपाल धरि भेल अछि। ख्यातिप्राप्त ओ शिष्ट विद्वान् लोकनि अपन–अपन रचना ओ मूल्य विचार पठाय अनुगृहीत कए अपन सदस्यताक रूपमे अपन परिचय देलनि अछि। बुझना जाइछ जे सरिपहुँ ई पत्रिका लोकप्रिय भऽ रहल अछि। संगहि प्रयास कएल जाऽ रहल अछि जे पाठकक लेल अपेक्षित, आकर्षक सामग्रीक समावेश रहय। लोकप्रिय भेने हम सभ उत्साहित छी। विश्वास अछि जे अपेक्षित सहयोगक प्राप्ति सँ मिथिला सुरभि सुदूर धरि जनमानस केँ सुरभित करत। जाहि मध्य कवयित्रीक काव्यक परिचय देखल जा सकैछ –

'तीरभुक्ति'क अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका थीक जे नई दिल्ली सँ त्रैमासिक रूपमे प्रकाशित होइत अछि। ई पत्रिका भिन्न–भिन्न शोध सामग्री पर केन्द्रित अछि। संगहि साहित्यक अन्यान विधाक विश्लेषनात्मक रचनाक लेल ख्याति प्राप्त कए रहल अछि। सम्पादकक रूपमे पत्रकारिता साहित्यक विश्लेषण आ विवेचन सँ जुड़ल श्री विनीत कुमार झा उत्पल'जी कए रहला अछि। ई पत्रिका 2018 ई सँ राजधानी दिल्ली सँ प्रकाशित भए रहल अछि।

'मिथिला मोद' क मैथिलीक वार्षिक पत्रिकाक रूप विशुद्ध साहित्य ओलख सँ युक्त डॉ. पंकज कुमार सम्पादकक रूपमे बनारस सँ प्रकाशित भए रहल अछि। जाहिमे कवयित्रीक बाल कविता चर्चा देखल जा सकैछ, 'मानसून' आ 'सुनबौआ सुन' मे–

"बस आबै लेल
दुनिया के देखबै लेल
सुन बौआ सुन।" [9]

21सम शताब्दीक मैथिली पत्र–पत्रिकामे महिलाक बाल साहित्यक पहिल महिला नाटककार रूपमे हम सर्वप्रथम नाम विभारानी जीक नाटक 'बलचन्दा' सेहो बाल मोन केँ प्रेरित करय बाल नाटक भेटैत अछि। ओतहि मैथिली महिला साहित्यकारक पहिल चित्रकथा कारक रूपमे प्रीति ठाकुरक मैथिली चित्रकथा मिथिलाक लोकदेवता, आ गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, संगहि नीतू कुमारीक मैथिली चित्रकथा बड़ लोकप्रिय भेल अछि। जाहि मध्य मे बाल चित्रात्मक रूपक वर्णन भेटैत अछि। ओतहि मुक्त मैथिली बाल ललित कला मे श्वेता झा चौधरी, ज्योति चौधरी, इरा मल्लिक आदि महिला साहित्यकारक नाम प्रमुख रूप सँ अबैत अछि।

बाल महिला कथाकारक रूपमे डॉ. नीता झाक "बिलाई मौसी' उल्लेखनीय बाल कथा संग्रह थिक। जाहिमे चित्रात्मक लयक संग खांटी मैथिली मे बालकथा लिखल गेल अछि। ओतहि बाल मुक्त कथामे महिला साहित्यकार यथा शेफालिका वर्माक 'आनक बड़ाई', 'साबरमती आश्रम', 'मूर्ख राजा' आ 'ओकर बेटा' आदि क नाम महिला बाल मुक्त कथा मे उल्लेखनीय नाम अछि। दोसर बाल महिला साहित्यकारक मध्य ज्योति झा चौधरीक 'देवीजी' बाल कथा संग्रह बाल साहित्य मध्य अपन विशेष स्थान रखैत अछि। विदेह शिशु उत्सव बाल महिला कवयित्रीक कविता समग्र विधाक अमूल्य कृति थिक जाहिमे डॉ. शेफालिका वर्मा नाम क संग–सग कवयित्री संस्कृति वर्माक केँ रचना प्रकाशित भेल अछि। मैथिली बाल कवयित्री जे मुक्तक काव्यक रचना कएलन्हि ओ अपन विशेष महत्व रखैत अछि, जाहिमे बाल कवयित्री मुक्त काव्यकारक रूपमे डॉ. इलारानी सिंहक "शिशु कलकत्ता" नेनाक लेल विशेष प्रियगर गीति काव्य रहल अछि। जकरा सर्वकालिक साहित्यिक मान्यता देल जा सकैछ।

वर्त्तमान पीढ़ीक क्रियाशील कवयित्रीक रूपमे ज्योति झा चौधरी 'बचपन', 'दलाम' आ 'एकटा भीजल बगरा' आ शांति लक्ष्मी चौधरीक 'बरखा–रानी आ कुम्हर' संग डॉ. जया वर्माक 'बेटी' आ इरा मल्लिक रचित 'छम–छम बरखा' ओ 'माँ' शीर्षक बाल कविता उल्लेखनीय बाल मुक्तक काव्यक रूपमे मानल जाइत अछि। जे निम्न कवितामे देखल जा सकैछ। जाहिमे कवयित्री बाल कविताक माध्यम सँ राष्ट्रीय सेवा भावना देखबाक योग्य अछि :–

" माय गे माय तौँ
हमरा बंदूक मँगा दे
तलवार मँगा दे
की हम तऽ माँ सिपाही हेबौ।" [10]

बाल साहित्यक प्रारम्भ बाल गीतेसँ होइत अछि– आरम्भ मे नेनाक निरर्थक शब्द सभ बजैत अछि। ओहि माध्यम सँ अपन मनक भाव प्रकट करैत अछि निरर्थक शिशु गीत जाहि प्रकारक शब्दमे लिखल जाइत अछि। जे निम्न गीतक भाषाक सौन्दर्य ओकर आवृत्तिमे छैक। एकर आवृत्तिए नेनाक रूचिकेँ एहि दिस आकृष्ट करैछ। क्रमशः गीतक स्तर बढ़ल जाइछ। नव–नव शब्द जुड़ैत चलैछ। नेना पशु–पक्षी केँ देखैछ, ओकर नाम जनैछ। अपना सँ भिन्न प्रकारक रहलाक कारण ओकरा प्रति आकर्षणो होइछ। गीतमे जखन एहन पशु–पक्षीक नाम अबैछ तँ ओ ओकरा रूचिपूर्वक पढ़ैछ तथा रटैछ। एहन गीतक भाषा–शैली एहि अर्थमे भिन्न होइछ जे किछु सार्थक, किछु निरर्थक शब्दप्रयोग सँ एहन लयक सृष्टि कयल जाइछ जे बच्चाक मन ओकरा पढ़बा लेल,

स्मरण रखबा लेल मचलय लगैछ। पशु–पक्षी सँ सम्बन्धित किछु गीत द्रष्टव्य थिक –

सूगासँ सम्बन्धित गीत–

"बाब हो, काका हो,
सूगा खाइ छ' धान हो।
हाँकौ बेटी लक्ष्मी
गोड़मे देबौ पैजनी।" [11]

हाथीसँ सम्बन्धित गीत–

अलेल मलेल के जरना
तुलसी फूल के लड़ना
मामा अबै छौ मामा
कथी पर, हाथी पर
उतरौ मामा खड़ाम पर
बैसौ मामा पिढ़िया पर..... [12]

बिलाड़ि सँ सम्बन्धित गीत–

हे गे बिलैया कतय जाइ छँ?
.....
कोना मारबँ? छब्बर छैयाँ।
कोना रीन्हबँ? छन्नर–पन्नर।
कोना खेमे? नम्मा चौड़ी। [13]

निम्नांकित एक प्रसिद्ध गीतमे सेहो बिलाड़क बाल कविता वर्णन शिशु गीतओ खेल मे उल्लेखित भेटैत अछि–

"एल सन बेल सन
धोबियाक पाट सन
.....
नूनू ननिहर देख
नूनू ददिहर देख। [14]

तहिना, एहि गीतमे तँ एक्के ठाम अनेक पशुक नाम आबि गेल अछि–

"अट्टा पट्टा, तीन तरौटा।
हमर बौआ के सात बेटा।
एक टा गेलै गायमे।
एक टा गेलै बड़दमे।
एक टा गेलै बकरीमे।
एक टा गेलै महीसमे।
एक टा गेलै खेतमे।
एक टा गेलै खरिहानमे।
चल गुदुर गाँइ, चल गुदुर गाँई।" [15]

आधुनिताक प्रभाव बाल साहित्य पर सेहो पड़त जे कवयित्री दीक्षिता झाक कलकता सँ प्रकाशित कर्णामृत पत्रिकाक, "लवली चाचू" शिर्षक कविता मे देखल जा सकैछ –

"पढ़ल–लिखल हो या अनपढ़
मुदा देखए मे हो रमणगर
.....
चाहे डिस्को हो या कथक
मुदा चाची तँ हो मनगर
.....
माडर्न हो चाहे देशी
बस एक्कहिटा नहि बेसी
गँ केओ नहि हो राजी
हमर मौसी के ल' आनू
हे यौ लवली लवली चाचू।" [16]

समाजमे लोक एक दोसरक पारिवारिक स्थिति पर कोना उलहन आ हुथैए छथि तकर वाणगी नवोदित कवयित्री मन्जू झा कवितामे कलकता सँ प्रकाशित कर्णामृत पत्रिका मे देखल जा सकैछ। यथा

"हुथैए हमरा टोलक लोक
ओ कहैए हम छी खनदानी।
जकर बाप पित्तीक किरदानी।
.....
अनका पर अंगुरी उठबैछ।
उक्खरि चढ़ि कऽ कान्ह लगै छै।
सोचे अपन कपारक टेटर
देखि नपावै लोक।
हुथैए हमरा टोल लोक।" [17]

बाल साहित्यके माध्यमे कवयित्री यातायात नियमक सामाजिक शिक्षा दैछ पटना सँ प्रकाशित 'घर–बाहर' पत्रिका मे कहैत छथि, बानगी देखल जा सकैछ –

"बाट पर आगु तकिते चल
ऊँच–नीच रोपोति चल।
थाल पानि सँ बचि के चल
.....
बाट टपै काल देखि के चल।
बाम दहिन के देखिते चल।" [18]

एकर अतिरिक्त घनेरो बाल कविता कवयित्री यथा– किरण मिश्रक 'पुष्पवाटिका', पन्ना झाक 'बाल बुझौअल भाई–बहिन' संख्या कोना जानि, शशि कर्णक 'बुझौअलि' सीमा कर्णक 'ज्ञान विज्ञान, अंकक खेल' आदिक संगहि समय साल पत्रिका मे कामनिक 'गाम घुरैत काल' मुन्नी कामैतक 'समरथि होइत बेटी', 'अंकुरैत बिया', शैलबालाक 'जयति जननी', रम्भाजीक 'बेटा बनल तराजू', आदि बाल काव्य बाल मोनक जिज्ञासा ओ भावक अवलोकन होइत बाल साहित्यक श्रीवृद्धि मे सफल कवयित्रीक योगदान दए रहल छथि। जाहि सँ बाल साहित्य आरो समृद्ध भए रहल अछि। अस्तु मैथिलीमे बाल साहित्यक खगता अछि। आवश्यकता अछि जे एकर व्यापक प्रचार–प्रसार रचना सँ बैसी मायक भाषाक सँ आपकत्ता राखल जाय। तखने सोनक समान इजोत भेटल। अपन माटिक सुगंध प्रदान करत। नव–नव शोध मैथिली बाल साहित्य पर उपलब्ध हुए। जाहि सँ बाल मोन पर मातृभाषा राज होयत। तखने अणिमा आ गरिमा सिद्धि पाओल।

संदर्भ

1. कृतिलता – बाबू राम सक्सेना, पृ. 4.
2. मैथिली साहित्यक इतिहास– जयकान्त मिश्र, पृ. 227.
3. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास– चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पृ. 140.
4. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. दिनेश कुमार झा, पृ. 130.
5. साहित्य–धारा– डॉ. सत्य नारायण मेहता; पृ. 13.
6. मैथिली अकादमी पत्रिकाक योगदान– डॉ. किरण कुमारी, पृ. 05–06.
7. आधुनिक पत्रकारिता– डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ. 1
8. भाखा (फरवरी 1987), सम्पादकीय, पृ. 1.
9. मिथिला मोद, वर्ष– 2016, पृ. 39.
10. शिशुगीत ओ खेल– संकलयित्री, डॉ. अणिमा सिंह, पृ. 14.
11. तीरभुक्ति, जुलाई–सितंबर– 2018, पृ. 28
12. शिशुगीत ओ खेल– संकलयित्री, डॉ. अणिमा सिंह, पृ. 15.
13. शिशुगीत ओ खेल– संकलयित्री, डॉ. अणिमा सिंह, पृ. 16.
14. कर्णामृत, जनवरी–मार्च–2010, अंक–117, पृ. 19.
15. मैथिली नेना गीत, 58.

16. कर्णामृत, जनवरी–मार्च–2013, पृ. 15.
17. कर्णामृत, जनवरी–मार्च–2013, पृ. 10.
18. घर–बाहर, अक्टूबर–दिसंबर– 2016, पृ. 27.